onlineBU.com

NS – 079

III Semester B.A. Examination, Nov./Dec. 2016
(Fresh) (CBCS)
(2016-17 and Onwards)
LANGUAGE HINDI – III
Natak, Sahityakaronka Parichay Aur Sankshepan

Time : 3 Hours | Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्य में लिखिए। **(1×10=10)**

1) हुमायूँ को राखी किसने भेजा ?
2) अर्जुनसिंह कहाँ का राजकुमार था ?
3) विक्रमादित्य के चाचा कौन थे ?
4) धनदास किसका भजन करता है ?
5) बहादुरशाह के उस्ताद कौन थे ?
6) 'रक्षाबंधन' के नाटककार का नाम क्या है ?
7) महाराणा साँगा की कितनी पत्नियाँ थी ?
8) धनदास के पुत्र का नाम क्या था ?
9) 'श्यामा' किसकी माता थी ?
10) ''चमड़ी चली जाय, पर दमड़ी न जाय'' इस कहावत को कौन कहता है ?

II. किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **(7×2=14)**

1) ''जिधर हवा का रूख उधर हमारा मुख ! यही तो संसार का सबसे बड़ा राजनीतिक सिद्धांत है।''
2) ''ज़हर के प्याले को एक साथ पी जाना सरल है। पर घूँट-घूँट कर के पीना कठिन है।''
3) ''जिस फूल को हम कलेजे से लगा कर रखना चाहते हैं, वही किसी दिन काँटे चुभा देता है।''

III. 'रक्षाबंधन'' नाटक का सार लिखकर उसकी विशेषताएँ बताइए। **(16×1=16)**

अथवा

'रक्षाबंधन' नाटक के आधार पर ''कर्मवती'' की कर्तव्यनिष्ठा पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

onlineBU.com

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए। **(5×2=10)**

1) धनदास

2) श्यामा

3) चाँद खाँ ।

V. किसी **एक** साहित्यकार का परिचय दीजिए। **(1×10=10)**

1) ममता कालिया

2) कमलेश्वर।

VI. उचित शीर्षक देते हुए संक्षिप्तीकरण कीजिए। **(10×1=10)**

वही समाज श्रेष्ठ है और वही राष्ट्र सुखी है, जिसकी जनता का चरित्र अच्छा हो। आज के बालक कल के नागरिक हैं। इसलिए उनके चरित्र का निर्माण करना समाज और राष्ट्र का पहला कर्तव्य है। यही कारण है कि स्कूल, कालेज आदि शिक्षा-संस्थाएँ खोली गयी है। वहाँ ऐसी शिक्षा दी जाती है, जिससे लड़कों का चरित्र सुधर जाए।

अकसर लड़के अपने से बड़ों की नकल करते हैं। बचपन में लड़के अधिक समय माता-पिता के पास रहते हैं। इसलिए वे उनकी अच्छाईयों और बुराईयों का अनुकरण आसानी से करते हैं। जो बात बचपन से लड़के सीख लेते हैं, आगे चलकर वही आदत बन जाती है। इसलिए जो अपने बाल-बच्चों का चरित्र बिगाड़ना नहीं चाहते, उनको चाहिए कि वे खुद भी अच्छा आचरण करें।
शिक्षा का असली उद्देश्य चरित्र का निर्माण ही है।

चरित्र को पवित्र रखने के लिए सब से पहले हृदय को साफ़ रखना चाहिए। जिसका मन सत्य का मंदिर है, उसका आचरण भी पवित्र रहता है। उसके आचरण में हिंसा नहीं रहती । वह अहिंसा का पुजारी बन जाता है। अहिंसा ही शांति की पहली सीढ़ी है।